

१६ नमो नारायणाय ॥ श्रुति लमाधवया तव तव दन ऊरु कृष्ण
दश कङ्क ॥ वसय विधि ॥ तदु तय कङ्क ॥ ७ ॥ कङ्क लङ्क ॥ ७ ॥
वसिष्ठा नर २ ॥ म्यलानेय ॥ ७ ॥ म्यलानेय ॥ ७ ॥ म्यलानेय ॥ ७ ॥
दवर्क य ॥ ७ ॥ म्यलानेय ॥ ७ ॥ म्यलानेय ॥ ७ ॥ म्यलानेय ॥ ७ ॥
ल ॥ ७ ॥ म्यलानेय ॥ ७ ॥ म्यलानेय ॥ ७ ॥ म्यलानेय ॥ ७ ॥
य ॥ ७ ॥ म्यलानेय ॥ ७ ॥ म्यलानेय ॥ ७ ॥ म्यलानेय ॥ ७ ॥
द ॥ ७ ॥ म्यलानेय ॥ ७ ॥ म्यलानेय ॥ ७ ॥ म्यलानेय ॥ ७ ॥
द ॥ ७ ॥ म्यलानेय ॥ ७ ॥ म्यलानेय ॥ ७ ॥ म्यलानेय ॥ ७ ॥

ऊयमानयूयराऊन॥ अद्यादि॥ आशुनिलसाधवरुहाकावस्यवर्षव
र्द्धनधजावयादनयसूनिमित्तार्थन॥ बलाध्या॥ नभासुनकाय॥
सिद्धिबसु॥ अय्यरा॥ ॥ ननीकुशुतिकर्मकर्यात॥ सूर्यार्थ॥ ॥
ॐ महां ॐ द्यादि॥ ॥ कयानधि॥ यथायथाविधिमकुहीकलस
चनं॥ विष्नुत्यास॥ आसुन॥ द्वावाचन॥ ॐ तत्त्वामि १०॥ कलसग्य
जा॥ अध्यायकयद्यादि॥ ॐ विष्नुनवाटमसि॥ ॐ आशुन॥ ॐ

आकिर्त्यकलसं॥ ४॥ ॥ मूर्ति कलसग्यजा॥ अध्यायकयद्यादि॥
गन्तवाप्तयनम४॥ ध्यान॥ मूलपिलोअलि॥ कलवादिद्वादशमूर्ति
नयजा॥ वेद॥ ॐ विष्नुनवाटमसि॥ ॐ आशुन॥ ॐ यावकान॥
ॐ यंअन१२॥ ॥ नवग्रह॥ ॐ आकृष्यद्यादि॥ १०॥ ॐ आनामि
न् १०॥ ॐ अध्यायकयद्यादि॥ ॐ अर्द्धमासा॥ आवाहनादि॥ ॥ धजा
दतसायजा॥ अर्द्धमासलखनहाय॥ ॐ तस्यतयविषयन॥ ॐ य

[illegible]

य॥ क्ष॥ ॥ अर्थयदासाधनार्थे ॥ दृष्टादृष्टिस्त्वसत्कर्मणि ॥ दृष्टा
दृष्टियुष्मि ॥ ॥ तिलादृष्टिदद्यात् ॥ सर्वत्राह्यं न काश्चिदर्थः ॥ ॥ अथाधि
यत्किंचित्त्वेन ॥ दृष्टमयानवित्त्या ॥ कलशायनिष्ठा ॥ ॥ स्रग्दृष्टि ॥ अ
थाज्जादित्यं साहसं ॥ ॥ दृष्टवत्कर्मयामृतयुजा ॥ यानवतः ॥ सूर्यार्थ
यादावज्ञानयात्रकः ॥ ॥ स्वस्तिवाचनं चित्स्मिन् यद्वाच्यं तत्त्वज्ञान
नरुत्तमं ॥ तिलादृष्टिदद्यात् ॥ ॥ सूर्यार्थः ॥ सूर्यन्यासः ॥ अथवा

यदुक्ता॥ अस्मादि॥ अस्माद्वर्गकहादि॥ गन्तुं सन्नायनम ४॥ ध्यान
सुदर्शनगदार्धमध्वस्थेवामस्यथा ४॥ सद्यथाकाम्यद्वयमाध्ववक्त्र
सन्निह॥ ॐ तिष्ठान ॥ मूलमन्त्रनित्तीकलि ३॥ लुक्कीयापिलीक
लि॥ मययि॥ केशवादिद्वादशमूर्तिनयुक्ता॥ अर्ग ॥ बलि ॥ म
दा॥ यदाद्यन॥ ॐ तत्सवामि॥ १०॥ ॐ योऽहं तत्सवामि॥ गन्तुं सन्नायन
यकायनम ४॥ गदायनम ४॥ ईश्वरायनम ४॥ यदायनम ४॥ ॐ ध्या

ध्वन ॥ ॐ ध्यामा लुगि॥ ॐ सुवर्णसि॥ ॐ सुवर्णवाच॥ ॐ अग्नि
यमा॥ ॐ यविप्रसक्त॥ ॐ ॥ ध्वन॥ ॐ ध्वनसि॥ दीया॥ ॐ
नकासि॥ ॐ याऽरुहिति॥ ॐ अन्नयन॥ ॐ सन्नायन॥ ॐ य॥ मुनि
ॐ नमो वावायनाय॥ नमो मुनकाय॥ अर्गगंधादि॥ ध्याविमर्क
नयाय॥ ॥ ध्यावक्त्ररत॥ कृष्णधियकाविश
दातव्य॥ वाक्कीर्णनदनस्य॥ ॐ अर्वावालाहकस्य॥ मासनक्षत्र॥

ॐ रुगावनदवदवरा जेलाकुषाचउरुका। यथाशक्काधर्जदकंयीय
नामधुददना॥ खरतमहाधर्जदयातु कुलावायंचवंगितुं। किंकिनाय
तसंयन्ता। मायुचक्रगुरुमिना। यतनेवविमानत। सर्वदवायविहि
तं। संवत्सवंसहस्रकं। भादतदिविविषुतनु॥ धर्जामाहाकर्तुं
यातु। यथायासादमानत। यथाधर्जाकर्तुंवायिदिगुविदिद्विनिव
रायतु। यदादिवसुतदनां। यावत्संकायविद्यत। तावद्वर्षसहस्रा

निविष्णु। लाकुमहायत॥ इतदवधायकं॥ ॐ कोदातुय०००॥
दवष्णुकर्तनकं॥ अणुगंधादि॥ कयककय॥ मूर्तिवत्सगीयानाय
ल्लयगरुविम॥ ॥ दवष्णुआदुतिवियमृत्समनुन॥ १०६॥ लक्षा
सहित॥ ॥
मनादुति॥ ॥
दादावदावदवधालिविथ॥ पितृत्वननासि॥ वाक्ययथाकर्म॥ ॥

शुद्धि॥ वदत॥ एवमनमस्तु॥ अखलमल्लकात्त॥ वतीति न्यास
कृत्याय अर्चयाम्युक्त॥ रुतस्तुद्धि आस्तुक्त॥ अवाहन्त॥ ग्राह
वर्तन॥ विदव॥ मूदा॥ कौं अस्ति नार्गस्ति वायनम॥ धनं वलि॥
कौं नूतु रेव वायनम॥ कौं चरु रेव वायनम॥ कौं कोध रेव वायन
म॥ कौं उन्नत रेव वायनम॥ कौं कया ली रेव वायनम॥ कौं
शोष रेव वायनम॥ कौं ४ संहार रेव वायनम॥ ॥ हं सा सनाय

नम॥ वदता॥ मयूजाहाय॥ गजुताहाय॥ सहिखाहाय॥ गजाम्नाय॥
यताहाय॥ अं वका धानम॥ धनं वलि॥ कौं माहृध्वानम॥ वं को
माहृध्वानम॥ दं वेध्वानम॥ नैवावाहिनम॥ वं ० द्याय वधेनम॥
यं तामूध्वानम॥ ॥ मरुतल्लानम॥ ॥ कौं रुतु क कृष्याहाय
वादका॥ धनं वलि॥ कौं विदु बानक कृष्याहाय वादका॥ कौं अग्नि
वता लक्ष्म्या वाय॥ कौं अग्नि कि का कृष्याहाय॥ कौं काहा क

दं प्रवा लाय ३ ॥ दं कवा लि स क प्रवा लाय ३ ॥ दं च कवा द क प्रवा ला
 य ३ ॥ दं हा म नू य क प्रवा लाय ३ ॥ दं ठा म न क प्रवा लाय ३ ॥ दं टा
 क क प्रवा लाय ३ ॥ दं अ च ल क प्रवा लाय ३ ॥ ॥ दं धि या ग क
 प्रवा लाय ३ ॥ दं व नू ष क प्रवा लाय ३ ॥ दं का ला य न क प्रवा ला
 य ३ ॥ दं अ दृ हा स क प्रवा लाय ३ ॥ दं अ य नि य न क प्रवा लाय
 ३ ॥ दं च वि य क प्रवा लाय ३ ॥ दं च का म्प क प्रवा लाय ३ ॥ दं द

मुनिनयावविकारय ॥ दत्तलक्ष्म्याकलद्वयक ॥ दत्त
विधिश्चयद्रुधनक ॥ वलिकारय ॥ दत्तयातसर्वमगत भलान
डनिद्वलस्याडकवसकमान ॥ कर्तक ॥ गधदत्तलक्ष्म्यान
मह्य ॥ लमग्रस ॥ कृष्णयूजाकाक ॥ इखादिखाकं वलद्वयक ॥
अरिभक्त ॥

नमानावायक्षय ॥ लमग्रसविधि ॥ सकवसंकानिकक ॥ वस
य ॥ अग्रसकलक्षय ॥ सलमन ॥ यक्षसुतेयूजाक ॥ वलि
कारमलानेडतलम ॥ लमलजा ॥ लमग्रकीमावा ॥ दगव
लि ॥ खल ॥ ॥ य ॥ अक्रमानयक्षरा
कन ॥ अद्यादि ॥ धीउनिहमाधवहृदावह्यसकवसंकानियावैधि
लमखालमग्रसार्थयद्रुनिमिल्याथन ॥ वल्लोअधी ॥ नमानुनताय ॥

मद्यहाला तस्मिन् ॥ ३ ॥ नृद्धन इद्धन निर्वन न किं नाना विप्रां न वलि श्रमू किं ।
 न वक्त्र विषू हव देव नृद्ध तस्मिन् ॥ ४ ॥ गम्भीर धीर्न निर्वो ह सुन्यं संसा न सा न
 नव पाप पूर्व । स देव देव मम चिरु लीनं तस्मिन् ॥ ५ ॥ न सा ग न प के ऊ य म द
 न जाति को ल । न र ह न र्द । पृथ क पृथ क त्वे न पृथ क त्वे ह न तस्मिन् ॥ ६ ॥ ॥
 ॥ नृद्धि श्री ग क न वा य वि न चितं नि न रे ऊ न सा रं स मा र्के ॥ ॥ ॥

आशा मरु कधि
 ASMA ARCHIVES

3144

पापवधाहति॥ अर्जुनप्रदि॥

१ वन्दे श्रीकलाम्बोमकल गुरुगतां सर्वथा गीतवन्थां पीतापीयूषाणां प
नमस्तस्वकृती मानसस्मृतिविधुर्द्धा । द्रव्यद्वयमायमानां सकलमूर्तिगण
सर्वसिद्धिददानां शरीरूपजलस्थानिजहवनगतां स्वस्वतृपां प
सनी ॥ ॐ ॥ ॥ पूर्वपूर्वमहत् नमो बीजमनस्मन् । मायाका

मो समुच्चार्य पुनर्जायां विलासो ॥ तवासीस ॥

१ ॐ नमः श्रीऽद्विष्टाकानिकायै ॥ सुमेरोरुतरे मृगे देवदेवजगत्पुरुं । ५
वाचपरयान्त्या देवं नत्वा वषध्वजं ॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥ देवदेव महादे
व सर्वशास्त्रार्थपारंग । कानिका कवचं देवसूचितं न प्रकासितं ॥ जाना
मि कवचं तस्याः केनोपायेन हे प्रभो । तस्यानो कथय स्वायु यद्वहंतव वल्ल
भा ॥ ॥ ईश्वर उवाच ॥ धृष्टासि किं महादेवि यन्मां पृच्छसि सो प्रतं । सत्प्रस
त्यं महादेवि कथितं नैव सुवते ॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥ अहं देव प्राणनाथ ना
हं हितवदल्लभा । स तूभक्तजनवासीत्यं सती मनसि सो भवान् ॥ कानिका

८ नाकुरे नवमः ॥ अक्षरानमदाहनी । अ
पता नवीनः ॥ वरुणः न विनायक
वक्रधनः ॥ मानः ॥ विनायकः ॥ विनायकः

॥ १३ ॥ नृपतिः नमो देवाः ॥ कनेकः
१॥ महापात्रः ॥ शतः ॥ नाकिः ॥ नाथः
॥ नवीनः ॥ नवीनः ॥ नवीनः ॥ नवीनः

॥ गणेशः ॥ महापात्रः ॥ विनायकः ॥
॥ ॥ अमुखात्कः ॥ अमुखात्कः ॥ अमुखात्कः
॥ अमुखात्कः ॥ अमुखात्कः ॥ अमुखात्कः

॥ ॥ अमुखात्कः ॥ अमुखात्कः ॥ अमुखात्कः
॥ अमुखात्कः ॥ अमुखात्कः ॥ अमुखात्कः
॥ अमुखात्कः ॥ अमुखात्कः ॥ अमुखात्कः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 सर्वभूतहिते रतः ॥ २ ॥
 दशमोऽध्यायः ॥ ३ ॥
 अथ दशमोऽध्यायः ॥ ४ ॥
 अथ दशमोऽध्यायः ॥ ५ ॥
 अथ दशमोऽध्यायः ॥ ६ ॥
 अथ दशमोऽध्यायः ॥ ७ ॥
 अथ दशमोऽध्यायः ॥ ८ ॥
 अथ दशमोऽध्यायः ॥ ९ ॥
 अथ दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

कौवर्धनः सखिकर्षमर्कोनतः १॥ देव
नारदः सखिकर्षमर्कोनतः १॥ देव
नारदः सखिकर्षमर्कोनतः १॥ देव
नारदः सखिकर्षमर्कोनतः १॥ देव

होममनीतीषडाक्षरी। कालिकाया स्वसर्वस्व स्वरूपेन प्रकाशितं ॥ शीघ्रानिकथ
यास्यायं गायत्रीवह्निरूपिणि। देतांच कालिकावैव विद्महे चततः परं ॥ स्वशा
नवासिनीचेति धीमहीतिततस्तनुः। योर कामाततः चोक्त प्रचोदया ततः पु
नः ॥ पाया न्नाद्वयभागाच ब्रह्मरंध्रादलं पुनः। धीमहीतितनुः पाया न्नांगल
नाभिदेशतः ॥ योर कामाततः पाया न्नाभितः पादयुग्मकं। प्रचोदयात्तपदं
प्रोक्तं सर्वांगदक्षिणावतु ॥ हृदयं पातु मे कालि कपालिनी गलं पुनः। कुला
मेपातु मंदौच कुरु कुल्यातु च कुरुषि ॥ विरोधिनी पातु कर्णौ दशनं विप्रचित्ति
का। उग्रामेपातु हस्तौ च उग्र प्रभाच मे शिरे ॥ समपादौ यातु दीप्ता नीलामे पा

तु श्रंशके। धनमेपातु द्यायां वलाकाचिदुके पुनः ॥ मात्रामेपातु दंतौ च उ
दरं सममुद्रिका। मितोचममेज्जिदोये पाया न्नांगल कारिणी ॥ पूताः सर्वाः समेत
श्च पाया सर्वो ग के पुनः। ब्रह्मरंध्रादलं पातु नारायणी तथैव च ॥ माहे श्वरी च
मेलनं करोतु सर्वदा पुनः। कौमारी सततं पातु कुलद्रुस समन्विता ॥ चामुण्डा
पातु मानित्यं प्रचंद गणसंस्थिता। अपराजिता मे रक्षां करोतु भुवनत्रये। वारा
ही च सदा पातु कालिका संयुता पुनः। नारसिंही च मेलनं करोतु नरमंदले ॥
पूर्वद्वारे च मां पातु शीघ्राणी परियुरिणी। ऐं वाग्भवे देवी त्वादी कुं कुं काम क
ला पुनः ॥ हूं हूं हूं मां मुखसंमुखे पिशाच भुवने वतु। श्रीं श्रीं वह्निरूपिण्यै
बुद्धिं मेपातु सुंदरी ॥

नारदः सखिकर्षमर्कोनतः १॥ देव
नारदः सखिकर्षमर्कोनतः १॥ देव
नारदः सखिकर्षमर्कोनतः १॥ देव
नारदः सखिकर्षमर्कोनतः १॥ देव

पद्मपद्मविष्मनक०॥१२॥ वाङ्मयः नक्षत्रमालागले स्थितः ॥ श्रीगि
तुङ्गनीवकुम्भानक० नीलावतयन॥ हृदः कपोलपातनीयत० ॥ २५॥
कुङ्कुमः नक्षत्रमालागले स्थितः ॥ श्रीगि

कान् (६) रुद्रि वा रु न ॥ ३ ॥ रु ग ना (७) नीति मा ॥ नी दि रुं नि रु म रु नि म ॥
 विं द पा न म ना वि रु ॥ व ग ल वा रु ना द वा न क व र्धु स (८) न ॥ १०
 मा ॥ रु म वा दी वि व रु ॥ ११ ॥ ॥ नी मा वा स वि रु र्धौ माः रु रु ॥ १२ ॥

